Issue-33, Vol-05, September 2017

Printing Area™

International Multilingual Research Journal

ISSN 2394-530

Printing Area UGC Jr.No.43053 UGC Approved Refereed Journal

Editor
Dr Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

38) दलित वाङ्मयात प्रतिबिंबीत झालेला भगवान बुध्दाचा स्त्री विषयक दृष्टिकोन
प्रा. संभाजी बाबाराव सावंत-डॉ. माधव बसवंते || 154

39) निर्गुण और सगुण काव्य-धारा का तुलनात्मक अध्ययन
ऋषि चौधरी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश० || 156

40) लोक कल्याणकारी राज्य और नीति—निर्देशक तत्व भारतीय संविधान के परिप्रेक्ष्य में
डॉ० विंध्यवासिनी तिवारी, गोला बाजार, गोरखपुर। || 159

41) भारतीय समाज में नारी
डॉ. पी. नागमणी, वरंगल जिला, तेलंगाना देश । || 163

42) भारतीय कृषी में हरित क्रांति की भूमिका
डॉ. एन. के. मुळे, माजलगांव जि. बीड || 164

43) हिन्दी बाल कविता और सूचनात्मक बाल साहित्य
अखिलेश कुमारी, ग्वालियर (म.प्र.) || 171

44) निराला और राम की शक्ति पूजा
डॉ० धर्मेन्द्र कुमार, मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०) || 176

45) हर्ष के रूपकों का सामाजिक चित्रण
डा० (श्रीमती) कमलेश्वरी थपलियाल, श्रीनगर गढ़वाल || 178

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

नारी के भी कदम आगे बढ़ रहे हैं। आज वह 'देवी' नहीं बनना चाहती, वह सही और सच्चे में अच्छा इंसान बनना चाहती है। नैतिक मूल्यों और मानवीय मूल्यं को नकारा नहीं जा सकता। हमारे पारम्परिक चरित्र नैतिक मूल्यों की धरोहर हैं।

भारतीय नारी
नर की 'नारी' नहीं
नर की अभिवृद्धि नारी है।
नारी में समाहित है।

स्पष्ट है कि भारत में शतब्दियों की पराधीनता के कारण महिलाएं अभी तक समाज में पूरी तरह वह स्थान प्राप्त नहीं कर सकी हैं जो उन्हें मिलना चाहिए और जहाँ दहेज की वजह से कितनी ही बहू-बेटियों को जान से हात धोने पडते हैं तथा बलात्कार आदि की घटनाएं भी होती रहती है, वही हमारी सभ्यता और सांस्कृतिक के कारण भारत की नारी आज भी दुनिए की महिलाओं से आगे है और पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर देश और समाज की प्रगति में अपना हिस्सा डाल रही है।

आज नारी होने के नाते मैं महसूस करती हूँ कि एक व्यक्ति के रूप में मेरी अपनी पहचान होना गयी है। मैं सिर्फ एक पत्नी, एक माँ, एक बहन या बेटी के रोल तक सीमित नहीं रहना चाहती। समाज की सक्रीय सदस्य बनना चाहती हूँ।

विषय सूची

1) भारतीय समाज में नारी दशा और दिशा
2) प्राचीन भारत में नारी
3) स्त्री समय समाज और संबंध
4) प्राचीन भारत में नारीयों का प्रतिरोध

❑❑❑

42

भारतीय कृषी में हरित क्रांति की भूमिका

डॉ. एन. के. मुळे
सुंदरराव सोळंके कला, वाणिज्य व विज्ञान वरिष्ठ महाविद्यालय,
माजलगांव जि. बीड

****

प्राक्कथन :-

भारत गांवो का देश है | यहां कुल 6,05,224 गांव व 3,949 शहर या कस्बे हैं | भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्वपुर्ण स्थान रहा है और आज भी वह महत्त्वपुर्ण है | कृषि केवल देश में जीविकोपार्जन का साधन ही नहीं है बल्कि अर्थव्यवस्था की रीढ की हड्डी है | देश के उद्योग धन्धे, विदेशी व्यपार, आय सृजन, विदेशी मुद्रा अर्जन, योजनाओं की सफलता आदि कृषि पर ही निर्भर है | भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास मुख्यतः कृषि पर निर्भर है | पिछले तीन दशकों में हरित क्रांति तथा खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भरता की प्राप्ति में विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी का योगदान है | किंतु ये उपलब्धियां हमारी कृषि की पुर्ण क्षमताओं को प्रकट नहीं करती | हरित क्रांति का असर अभी तक मुख्यतया गेहूं, चावल और मक्का तक सीमित रहा है | अन्य देशों के मुकाबले मे भारतीय कृषि अभी भी काफी पिछड हुई है |

कृषि की भूमिका एवं महत्व :-

किसी भी अर्थव्यवस्था में उद्योग, शिल्प व अन्य कलाओं तथा नगरों के विकास में कृषि की महत्त्वपुर्ण भूमिका होती है | कृषि से प्राप्त अधिशेष से ही नगरों के विकास में सहाय्यता मिलती है | कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का महत्त्वपुर्ण क्षेत्र है, यह निम्न तथ्यों के स्पष्ट है |

1) राष्ट्रीय आय में कृषि -अंश :- विश्व बैंक के विश्व विकास वृत्तांत के अनुसर भारत में कृषि क्षेत्र का देश के सकल घरेलु उत्पाद में लगभग 26 प्रतिशत अंश है, जबकि यह फ्रांस में 3 प्रतिशत, जर्मनी, स्वीडन व जापान में 2 प्रतिशत ही है | भारत की अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्र कुल मिलाकर 74 प्रतिशत अंश ही सकल घरेलु उत्पाद में प्रदान करते है | इससे स्पष्ट है की भारत की राष्ट्रीय आय में देश के कृषि क्षेत्र का महत्त्वपुर्ण योगदान है | कृषि क्षेत्र का यह अंश

पिछले वर्षो में निरंतर कम होता जा रहा है जो निम्न तथ्यों से स्पष्ट है-

वर्ष	कृषि क्षेत्र का अंश
1950-51	59 प्रतिशत
1960-61	52 प्रतिशत
1970-71	41 प्रतिशत
1980-81	36 प्रतिशत
1990-91	34 प्रतिशत
2000-01	27 प्रतिशत
2005-06	26 प्रतिशत

2) नागरिकों एवं पशुओं के लिए खाद्यान्न एवं चारा उपलब्ध कराना -

कृषि क्षेत्र देश के लगभग एव अरब दस करोड नागरिकों के लिए खाद्यान्न एवं 50 करोड पशुओं के लिए चारा उपलब्ध कराता है | भोजन उपलब्धि की दृष्टि से भारत में कृषि एक महत्त्वपुर्ण क्षेत्र है|

3) नागरिकों के जीवन-निर्वाह के लिए साधन उपलब्ध कराना-

जीवन-निर्वाह की दृष्टि से कृषि क्षेत्र पर देश की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रुप से निर्भर है | अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्र सम्मिलित रुप से लगभग शेष 35 प्रतिशत जनसंख्या को जीवन निर्वाह के लिए साधन उपलब्ध कराते है | नागरिकों को रोजगार उपलब्ध कराने की दृष्टि से भारत में कुल रोजगार के साधनों का लगभग आधा भाग कृषि क्षेत्र उपलब्ध कराता है |

4) अन्तराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में कृषि का अंशदान -

भारत के विदेशी व्यापार का अधिकांश भाग कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है | कुल निर्यात में कृषि वस्तुओं का अनुपात लगभग 18 प्रतिशत है | पिछले कुछ वर्षा से भारत के निर्यात एवं मुख्य रुप से कृषि वस्तुओं के निर्यात की मात्रा एवं मुल्य में बढोतरी हुई है जो आर्थिक विकास की दृष्टि से महत्त्वपुर्ण है | कृषि क्षेत्र से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में चाय, कॉफी, तम्बाकु, काजू,जूट, कपास, ऊन, वादाम, खाद्य तेल, सुपारी, गोंद, किशमिश, चमडा, खली, मसाले तथा फल प्रमुख है |

5) प्रमुख उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चा माल -

कृषि क्षेत्र से देश के प्रमुख उद्योगों कपडा, जूट, चीनी तिलहन, वनस्पती, चाय, रबर,कागज आदि के लिए आवश्यक कच्चा माल प्राप्त होता है | उद्योगों के विकास में कृषि का महत्त्वपुर्ण स्थान है |

6) अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों के विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान:-

देश की अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्र आन्तरिक व्यापार, परिवहन, संचार-संग्रहण, संसाधन, बँकिंग एवं अन्य सहाय्यक क्षेत्रों के विकास में कृषि क्षेत्र का महत्त्वपुर्ण योगदान है | कृषिक्षेत्र में अधिक उत्पादन होने पर इसके आधारित उद्योगों को भी अधिक व्यवसाय प्राप्त होता है |

7) विभिन्न उद्योगों से निर्मित वस्तुओं का कृषि क्षेत्र में उपयोग-

देश के अनेक उद्योगों से निर्मित वस्तुएँ जैसे-उर्वरक, कीटनाशक औषधियाँ, कृषियंत्र, मशीनें, बीज आदि का कृषि क्षेत्र में की पुर्ण रुप से उपयोग होता है | कृषि क्षेत्र में इनका उपयोग बढनें से इन दुसरे उद्योगों की भी द्रुतगति से विकास होता है | अतः कृषि और ये उद्योग एक-दुसरे के पुरक माने जाते हैं |

8) निर्धनता स्तर में कमी लाने में कृषि क्षेत्र का योगदान -

देश में व्याप्त निर्धनता के प्रतिशत को कम करने में भी कृषि क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण योगदान है | कृषिप्रधान देश होने के कारण में रेखा से नीचे जीवन-यापन कर रही जनसंख्या के प्रतिशत में कमी भी कृषि क्षेत्र के विकास व्दारा ही हो पाती है |

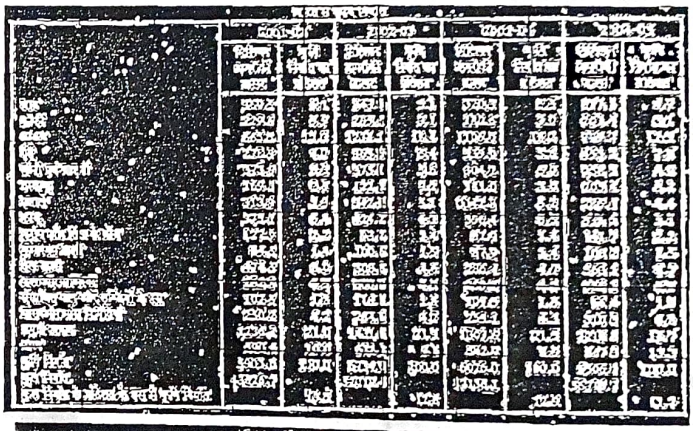

9) उपभोक्ता आय का कृषि वस्तुओं पर व्यय का अंश - देश के उपभोक्ताओं की आय का लगभग 70 ते 80 प्रतिशत कृषि उत्पादों के क्रय पर व्यय होता है| क्योंकि खाद्यान्नों की माँग की लोच के अधिक होने से कीमतों में होने वाले उतार-चढाव का प्रभाव उपभोक्ताओ के रहन-सहन के स्तर को सीधा प्रभावित करता है |

नई कृषि युक्ति और हरित क्रांति :-

भारत में कृषि में उत्पादकता बढाने के लिए पहला संगठित

प्रयास 1960-61 मे गहन कृषि-जिला कार्यक्रम (Intensive Agricultural District Programme) के लिए चुने गए सात जिलों के लिए पाइलट परियोजना के रुप में किया गया था | इस प्रयोग में मिली सफलता से उत्साहित होकर सरकार ने अक्टुबर 1965 में इस नीति को गहन कृषि-जिला कार्यक्रम (Intensive Agricultural District Programme) के अन्तर्गत चुने गए 114 जिलों में लागु किया |

अल्पविकसित देशों में पिछडी कृषि के तकनीकी हल की नई नीति कुछ अन्य देशों में पहले सफल हो चुकी थी | उदारहणार्थ, 1965 में मैक्सिको में गेहूँ की प्रति हेक्टर पैदावार 5 ते 6 हजार किलोग्राम हो गई थी | इसी प्रकार ताईवान में प्रति उपज लगभग 5,000 किलोग्राम तक पहुँच गई थी | भारत सरकार को दुसरे देशों को सफलताओं से कृषि विकास की सम्भावनाओं का पता चला | इसके अलावा भारतीय कृषि अनुसन्धान केन्दों ने भी मक्का, बाजरा और ज्वार की संकर (Hybrid) किस्में खोज निकालीं जिनके व्दारा इन फसलों की प्रति हेक्टर उपज में वृध्दि कर सकना संभव हुआ | नई कृषि नीति को पैकेज कार्यक्रम (Package Programme) के रुप में ही अपना सकना सम्भव था | दुसरे शब्दों में, नई कृषि नीति की सफलता के लिए आवश्यक था कि सिंचाई की नियन्त्रित व्यवस्था के साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों, संकर बीजों और कीटनाशक दवाओं दवाओं का उपयोग किया जाए | इस बात को ध्यान में रखते हुए नई कृषि युक्ति (New Agricultureal Strategy) को 1966 में एक पॅकेज कार्यक्रम के रुप मे शुरु किया गया और इसे अधिक उपज देने वाली किस्मों का कार्यक्रम (High Yiedling Varieties Programme) की संज्ञा ही गई | चौथी योजना शुरु होने के समय यह कार्यक्रम 18 लाख 90 हजार हेक्टर भूमि पर लागू किया गया | 1998-99 तक यह कार्यक्रम 7 करोड 84 लाख हेक्टर भूमी पर अपनाया जा चुका था जो कि खाद्यान्नो के अधीन क्षेत्र का 62.6 प्रतिशत है|

हरित क्रांति का प्रभाव :-

नई कृषि युक्ति के परिणामस्वरुप खाद्यान्नों के उत्पादन में तेज वृध्दि हुई | खाद्यान्नों के उत्पादन की तीसरी योजना में वार्षिक औसत 8 करोड 10 लाख टन था जो आठवी योजना में 18 करोड 70 लाख टन तथा ग्यारहवी योजना में बढ कर 23 करोड 74 लाख टन हो गया | 2013-14 में खाद्यान्नों का उत्पादन 26 करोड 48 लाख टन तक पहुँच गया जो अब तक का सर्वाधिक उत्पादन है | उन्नत किस्म के बीजो का कार्यक्रम केवल पांच फसलों-गेहूँ चावल, ज्वार, बाजरा तथा मक्का के लिए अपनाया गया था | इसलिए अखाद्य फसलों (Non foodgrains) को नई युक्ति से बाहर रखा गया था|

प्राविधिक या टेक्नोलॉजिकल परिवर्तन :-

जब 1966-67 में हरित क्रांति की टेक्नोलॉजी अपनाई गई | आंकडों से यह साफ जाहिर है की 1950 से पहले भारत में कृषि की विकास दर 0.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष से भी कम थी जबकि आजादी के बाद के वर्षों में कृषि उत्पादन जो 1950-51 में सिर्फ 5 करोड 80 लाख टन था वह 1992-93 में बढकर 18 करोड टन हो गया | 1949-50 से 1964-65 (हरित क्रांती की शुरुआत से पुर्व का समय) के दौरान 2.6 प्रतिशत की विकास दर के मुकाबले 1966-67 से 1984-85 की अवधि में कृषि उत्पादन 3.1 प्रतिशत की दर से बढा | हरित क्रांति के समय (1966-76-1984-85) में उत्पादकता में वृध्दि के कारण उत्पादन मे करीब 75 प्रतिशत बढोतरी हुई जबकि इसके पहले की अवधि में यह केवल 43 प्रतिशत बढी थी | इसी तरह कृषि क्षेत्र में बढोतरी 58 प्रतिशत से घटकर 25 प्रतिशत रह गई |

हरित क्रांति के माध्यम से देश ने खाद्यान्नो के मामले में जो आत्मनिर्भरता प्राप्त की है उसके पिछे विज्ञान और टेक्नोलॉजी की सफलता की कहानी छिपी है | वास्तव में कृषि उत्पादन के क्षेत्र में अब तक की उपलब्धियाँ हमारी कृषि अनुसंधान प्रणाली की पुर्ण क्षमताओं को प्रदर्शित नहीं करती है बल्कि केवल बीज, खाद और पानी के चमत्कार की ही कहानी है | इस संबंध मे नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. नार्मन ई. बोरलांग (Normal R. Borlang) ने स्पष्ट लिखा है की "If high yielding wheat and rice varieties were the catalysts that ignited the green revolution, the chemical fertilisers was the fuel that powered its forward thrust." अर्थात यदि उन्नत प्रजातियों के गेहूँ और धान के बीच हरित क्रांति के लिए उत्प्रेरक थे तो रासायनिक खाद ईंधन था जिसने उनको चलने की शक्ति दी | इस प्रकार हरित क्रांति वास्तव में बीज, खाद, पानी की ही क्रांति है | परंतु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि किसान विज्ञान और टेक्नोलॉजी के अन्य बेहतर प्रयोगों के प्रति उदासिन है | उसकी मानसिकता में इतना परिवर्तन हुआ है कि दूर-दराज के गांवो में भी किसान नई तकनीक का स्वागत करने को तैयार है |

उन्नत प्रजातियों के बीज का प्रयोग (HYVP) :-

उन्नत प्रजातियों के बीज का प्रयोग 1966-67 में प्रारंभ किया गया | उन्नत जातियों में धान, गेहुं, ज्वार,बाजर, मक्का और रागी (Ragi) के अंतर्गत क्षेत्रफल में किस प्रकार वृध्दि हुई यह

सारणी में दिखलाया गया है | वर्ष 1966-67 में उन्नत प्रजातिओं की खेती मात्र 18.9 लाख हेक्टेयर पर की गई थी जो बढकर 1990-91 में 648.81 लाख हेक्टेयर हो गई और 1997-98 में 760.0 लाख हेक्टेयर भूमि पर खेती करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था जिसे प्राप्त कर लिया गया है |

सारणी से स्पष्ट है की धान और गेहूं का योगदान 80 प्रतिशत से अधिक है इस प्रकार हरित क्रांति धान और गेहूं की ही क्रांति है | 1980 के दशक में अनाज के अलावा दालों, तिलहनों और आलु के क्षेत्र में भी उन्नतशील बीजों का प्रयोग बढा है | वर्ष 1990-91 में अनाजों के लिए 34.41 लाख क्विंटल बीज का वितरण किया गया था जबकि दालों, तिलहनों और आलु के क्षेत्र में क्रमश: 3.54,8.69 और 8.0 लाख क्विंटल बीज का वितरण किया गया था | इस प्रकार उन्नतशील बीजों ने अनाज के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी अपना प्रभाव दिखाना शुरु कर दिया है |

उन्नत प्रजातियों के अंतर्गत क्षेत्रफल

लाख हेक्टेयर

फसलें	वर्ष 1966-67	1990-91	1991-92	1994-95	1997-98
धान	8.9	250.07	294.80	328.0	322.0
गेहूं	5.4	210.29	218.48	233.0	230.0
ज्वार	1.9	70.62	80.50	70.0	90.0
मक्का	2.1	25.21	28.19	29.0	36.0
रागी	1.48	13.0	13.0	12.0	
योग	18.9	648.81	693.2	735.0	760.0

स्त्रोत - India, 1994

रासायनिक खादों का प्रयोग :-

भारत में नाइट्रोजन, फास्फेट और पोटाश तीनों प्रकार की रासायनिक खादों का प्रयोग होता है | देश की आवश्यकता का लगभग 30 प्रतिशत आयात किया जाता है और शेष का उत्पादन अपने देश में होता है | वर्ष 1990-91 में लगभग 125 लाख टन रासायनिक खाद का उपयोग गया था जिसमें 27.5 टन का आयात किया गया था | रासायनिक खाद का प्रयोग दिनोंदिन बढता ही जा रहा है | 1950-51 में कुल 0.69 लाख टन रासायनिक खाद का उपयोग किया गया था जो बढकर 1970-71 में 22.60 लाख टन तथा 1990-91 में 125.70 लाख टन हो गया | इस प्रकार 1950-51 से 1990-91 तक रासायनिक खाद के उपयोग में प्रतिवर्ष 13.9 प्रतिशत की वृध्दी हुई है | 1950-51 में प्रति हेक्टेयर रासायनिक खाद का प्रयोग 0.52 किलोग्राम था जो बढकर 1990-91 में 68.88 किलोग्राम हो गया | इस प्रकार प्रतिवर्ष 13.0 प्रतिशत की वृध्दी हुई है | भारत में रासायनिक खाद के प्रयोग की तुलना अन्य देशों से सारणी में दी गई है | यद्यपि ये समंक कुछ पुराने है किंतु तुलनात्मक स्थिती में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है |

सारणी से स्पष्ट है की भारत में प्रति हेक्टेयर रासायनिक खाद का प्रयोग चीन या पाकिस्तान से कम नहीं किंतु जापान, फ्रांन्स और इजराइल से काफी कम है | यदि राज्यों के अनुसार रासायनिक खाद के प्रयोग पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि 1994-95 में कुछ प्रमुख राज्यों में प्रति हेक्टेयर खाद का प्रयोग कि.ग्रा. में इस प्रकार था |

कुछ प्रमुख देशों में 1988-89 के प्रति हेक्टेयर रासायनिक खाद का प्रयोग

देश	कि. ग्राम प्रति हेक्टर
भारत	60.9
चीन	60.9
पाकिस्तान	67.2
इजराइल	173.4
जापान	365.4
फ्रांस	193.5

स्त्रोत : FAO, Fertiliser year Book, Vol. 39

उत्तर प्रदेश 99.27, बिहार 64.5 पंजाब 174.7, हरियाणा 128.37, राजस्थान 34.80, मध्य प्रदेश 37.41, तामिलनाडू, 136.64, कर्नाटक 64.92 और आंध्र प्रदेश 121.38 | इस प्रकार बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश संपूर्ण देश के लिए औसत 175.68 से कम प्रयोग कर रहे है |

हरित क्रांति के फलस्वरुप जिस तरह से रासायनिक खाद

का प्रयोग बढा है और जैविक या गोबर की खाद का प्रयोग घटा है इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि 1960-61 में रासायनिक खाद या अंश कृषि और पशुपालन में कुल उत्पादन लागत में 2.2 प्रतिशत था तो बढकर 1980-81 में 15.1 प्रतिशत तथा 1992-93 में 23.6 प्रतिशत हो गया था | इसके विपरीत गोबर की खाद या अंश 1960-61 में जो 8.7 प्रतिशत या वह घटकर 1992-93 में 3.4 प्रतिशत ही रह गया था | कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग जो 1960-61 में 0.7 प्रतिशत था वह बढकर 1980-81 में 1.6 प्रतिशत हो गया था परंतू 1992-93 में यह घटकर 1.4 प्रतिशत ही रह गया था | इससे स्पष्ट होता है कि लोग कीटनाशक दवाईयों के प्रयोग के हानिकारक प्रमाणों से धीरे-धीरे परिचित हो गए है |

भारत में रासायनिक उर्वरकों का उत्पादन, आयात तथा आर्थिक सहायता

वर्ष	उत्पादन (N+P) (हजार टन में)	आयात (N+P+K) (हजार टन में)	आर्थिक सहायता (सब्सिडी) (करोड़ रु.) आयातित उर्वरकों पर (नियंत्रित)	घरेलू उर्वरकों पर (नियंत्रित)	कुल
1990-91	9045	2758	659	3730	4389
1991-92	9683	2769	1300	3500	4800
1992-93	9736	2988	996	4800	5796
1993-94	9047	3166	600	3800	4400
1994-95	10120	1518	500	3500	4000
1995-96	8777	3965	1935	4300	6235
1998-99	10426	2165	983	900	9983
2000-01	14705	2090	1	9480	9481
2001-02	15041	1950	500	7956	8456

N = नाइट्रोजन
P = फास्फेट
K = पोटाश

पानी सिंचाई की स्थिती :-

बीज, खाद, टेक्नोलॉजी तभी सफल हो सकती है जब सिंचाई की उचित और पर्याप्त व्यवस्था हो | सिंचाई या पानी की उचित और सामयिक व्यवस्था न होने पर न तो चमत्कारी बीज अपना चमत्कार दिखा सकता है और न रासायनिक खाद अपना कमाल दिखा सकती है | 150.51 में कुल सिंचित क्षेत्रफल 2.26 करोड हेक्टेयर था जो बढकर 1990-91 में 5.90 करोड हेक्टेयर हो गया | इस प्रकार 1950-51 से 1990-91 की अवधि में सिंचित क्षेत्रफल में प्रतिवर्ष 2.4 प्रतिशत ही वृध्दि हुई है | आज भी कुल सिंचित क्षेत्रफल कुल कृषिगत क्षेत्रफल का 32.3 प्रतिशत ही है | इस प्रकार 70 प्रतिशत खेती असिंचित क्षेत्र पर हो रही है | स्वतंत्रता की प्राप्ति के पुर्व ही सिंचाई की क्षमता में वृध्दी के लिए बहुउद्देशीय नदी घाटी योजनाओं पर कार्य प्रारंभ हो गया था | अब तक जो नदी घाटी परियोजनाएं पूरी को चुकी हैं उनमें उल्लेखनीय है |

भाखडा नांगल (पंजाब, हरियाणा, राजस्थान), दामोदर घाटी परियोजना (पं. बंगाल व बिहार), हीराकुड बांध परियोजना (उडीसा), तुंगभद्रा (आंधप्रदेश व कर्नाटक) कोसी परियोजना (बिहार), नागार्जुन सागर परियोजना (आंध्र प्रदेश), भाकडा धारा परियोजना (मध्य प्रदेश व राजस्थान), माही परियोजना (गुजरात), व्यास परियोजना (पंजाब, हरियाणा, राजस्थान), रामगंगा परियोजना (उत्तर प्रदेश), गण्डक परियोजना (बिहार, उ.प्र.) फरक्का (प.बंगाल) , सारदा सहायक (म.प्रदेश) राजस्थान नहर परियोजना (राजस्थान), भीमा परियोजना (महराष्ट्र आदि | इनके अतिरिक्त (Command Area Development Programme-CAD) पांचवी पंचवार्षिय योजना में शुरु की गई | जमीन की सतह से नीचे से पानी के प्रयोग के लिए पाताल कुएं खोदे गए पॅपिंग सेट्स लगाए गए | प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में सिंचाई और बाढ नियंत्रण पर बढती हुई मात्रा में धनराशी आवंटित की गई | इतने प्रयास के बावजूद भी 70 प्रतिशत क्षेत्र असिंचीत है | इसलिए आज भी कहा जाता है कि भारतीय कृषि मानसून का जुआ है | अनुमान लगाया गया है की देश में सारी सिंचाई क्षमता के विदोहन के बाद भी 2020 ई.तक लगभग 50 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि वर्षा पर आधारित रहेगी |

विभिन्न फसलों में सिंचित क्षेत्रफल भारत में विभिन्न फसलों के अंतर्गत बोए गए क्षेत्रफल में सिंचित क्षेत्रफल के अंश एक जैसे नहीं है | यह सारणी से स्पष्ट है |

1995 - 96 में विभिन्न फसलों के अंतर्गत सिंचित क्षेत्रफल

फसलें	सिंचित क्षेत्रफल	
	1970-71	1997-98
चावल	38.4	50.1
गेहूं	54.3	85.0
बाजरा	4.0	6.2
मक्का	15.9	21.9
सभी दालें	8.8	12.0
तिलहन	7.4	24.3
गन्ना	72.4	90.7

स्त्रोत :- भारत का आर्थिक सर्वेक्षण, 2001-02

सारणी से स्पष्ट है की गन्ना और गेहूं में सिंचित क्षेत्रफल 75 प्रतिशत से ऊपर जबकी अन्य में यह 50 प्रतिशत से भी कमी है | दालों के संदर्भ में तो यह केवल 12 प्रतिशत ही है | इसी प्रकार वाजरा के क्षेत्र में भी बहुत कम है | इस प्रकार स्पष्ट है की खेती के लिए पानी या सिंचाई हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए |

अन्य इन्पुट्स (Input) का प्रयोग :-

हरित क्रांति के दौरान बीज और खाद के प्रयोग के अतिरिक्त ट्रैक्टर्स, पॅपिंग सेट्स और कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग भी बढा है

| ट्रैक्टर्स की संख्या 1966 मे कुल 54 हजार थी जो बढकर 1990 में 12.97 लाख हो गई | 1966 में एक लाख हेक्टेयर कृषित क्षेत्रफल पर कुल 34 ट्रैक्टर्स थे जबकि 1990 में 710 थे| इस प्रकार ट्रैक्टर्स के प्रयोग में लगभग 14.2 प्रतिशत की वृध्दि हुई है | डिजल के पंपसेट्स की संख्या उसी अवधि में 4.65 लाख से बढकर 47 लाख हो गई अर्थात प्रतिवर्ष 10.1 प्रतिशत की वृध्दि हुई है | इसी अवधि में बिजली से चालित पंपसेट्स एवं टयुबवेल्स की संख्या में 12.4 प्रतिशत की वृध्दि हुई है | 1990 में कुल 85 लाख बिजली से चालित टयुबवेल्स एवं पंमसेट्स थे |

पौध रक्षण हेतु कीटनाशक दवाइयों के प्रयोग में पर्याप्त वृध्दि हुई है | 1950-51 में 2400 टन कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग किया गया था जबकि 1990-91 में कुल 82400 टन कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग हुआ है | भारत में कीटों और बीमारियों के कारण 6 हजार करोड रुपये से लेकर 7 हजार करोड रुपये वार्षिक फसलों की क्षति होने का अनुमान है | अन्य देशों की तुलना में भारत में कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग कम होता है लेकिन भारत में भी कुछ ऐसे स्थान है जहाँ अधिक प्रयोग किया जाता है | इस प्रकार प्रयोग में लाई गई कीटनाशक दवाइयों के अवशेष पर्यावरण में रह जाते हैं जो खाद्य पदार्थां को प्रदुषित करते है | अत: अधिक मात्रा में किटनाशक दवाईयों का प्रयोग पर्यावरणीय खतरे की संभावना से भरा पडा है |

हरित क्रांति के बाद कृषि क्षेत्र में इन्पुट्स के प्रयोग में विविधता आई है | उन्नतशील बीज, रासायनिक खाद, पानी, कीटनाशक दवाइयों, कृषि यन्त्रों के प्रयोग में पर्याप्त वृध्दि हुई है किंतु अध्ययनों से ज्ञात होता है कि इन्पुट्स की उत्पादकता के सुचकांक में अस्सी के दशक में हास हुआ है | यह निम्नलिखीत से स्पष्ट है |

भारत में अधिकांश कृषक कम शिक्षित है जिसके कारण वे संसाधनों का कुशलतम प्रयोग नही कर पाते हैं | इनके व्दारा प्रयोग में लाई गई तकनीक भी बहुत सुधरी हुई नहीं है जिसके कारण इन्पुट्स के प्रयोग में मितव्ययिता नहीं हो पाती है | इसके लिए जरुरी है कि प्रसार सेवाओं के माध्यम से किसानों को इन्पुट्स के प्रयोग की अच्छी ट्रेनिंग दी जाए |

देश में भूमि के कटाव, जंगलों के कटाव तथा जल बहाव के कारण पोषक तत्व मृदा के साथ बह जाते है | अत: भूमि का रख-रखाव बहुत जरुरी है | सारणी से स्पष्ट है कि इन्पुट्स की उत्पादकता का सूचकांक जो 1980-81 में 100 प्रतिशत था वह घटकर 1988-89 में 92.8 प्रतिशत रह गया | इस प्रकार प्रतिवर्ष इन्पुट्स की उत्पादकता में 1.6 प्रतिशत का ऱ्हास हुआ है | इस हास की व्याख्या वर्ध्दित मुल्य (Value added) के रुप में भी प्रस्तुत की जा सकती है | 1960-61 में कृषि एवं पशुपालन क्षेत्र में वर्ध्दित मुल्य 79.7 प्रतिशत था जो घटकर 1980-81 में 73.2 प्रतिशत हो गया | 1990 के दशक में इसमें मामुली सुधार हुआ और 1992-93 में यह 74.1 प्रतिशत था | फिर भी यह 1960-61 के स्तर से बहुत की कम है | इस ऱ्हास के दो प्रमुख कारण बताए जाते है जिनका विवरण निम्न प्रकार है |

भारत में जो भूमि उपलब्ध है उसका हर साल 16.35 टन प्रति हेक्टेयर की दर से कटाव होता जा रहा है | कटाव का शिकार होने वाली भूमि में 53.7 लाख टक तक पोषक तत्त्वों की हानि हो जाती है |

भूमि सुधार और टेक्नालॉजिकल प्रगति में गहरा संबंध है | भूमि सुधार के क्षेत्र में स्वामित्व की सुरक्षा तथा चकबंदी ने नवीन टेक्नालॉजी के प्रयोग को प्रेरित किया है | आवश्यकता है संसाधनों के कुशलतम प्रयोग की ताकि उत्पादकता का सुचकांक बढे | खेती के प्रति व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाना तथा शुध्द लाभ लागत की गणना करना अत्यंत आवश्यक है | अतिरिक्त भूमि की आंवटन भूमिहीनों की शीघ्रातिशीघ्र हो जाना जाहिए|

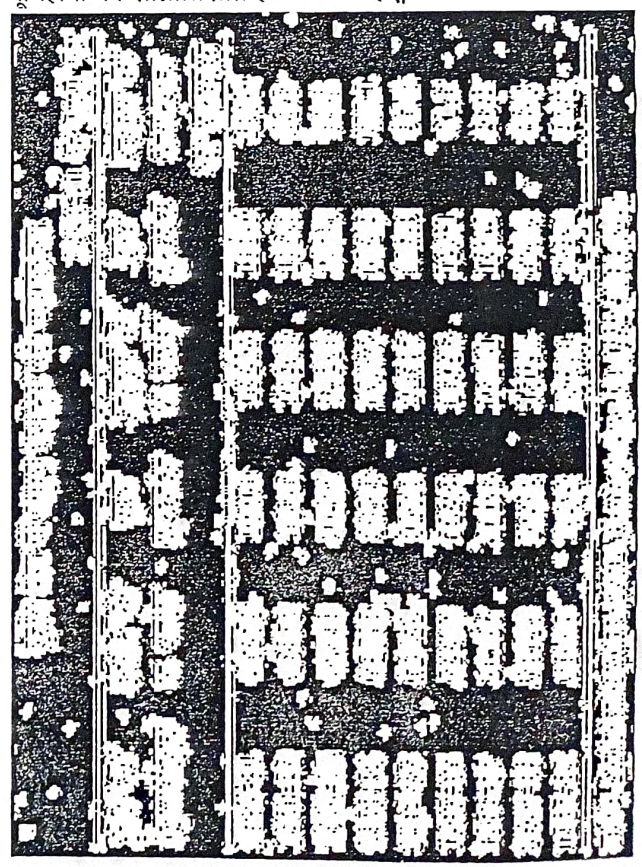

नोट :- इन्पुट्स में बीज, गोबर की खाद, रासायनिक खाद, सिंचाई व्यय, बिजली पर व्यय, कीटनाशक दवाइयों पर व्यय, मरम्मत पर

व्यय, स्थिर पूंजी की टूट-फुट, घिसावट जानवरों के चारे पर व्यय, बाजार व्यय आदि सम्मिलित है |

हरित क्रांति का मुल्यांकन
(Evaluation of the Green Revolution):-

हरित क्रांति के लाभदायक एवं हानिकारक दोनों ही पहलू है | लाभदायक पक्ष हानिकारक पक्ष की तुलना में कुछ मजबुत है | विदेशी अर्थशास्त्रियों का मत था की जनसंख्या की तीव्र वृध्दि दर को देखते हुए भारत कभी भी खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर नहीं हो सकता | परंतू यह हरितक्रांति का ही परिणाम है कि भारत आज खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर है | 1971-72 में पहली बार भारत ने बांग्लादेश को खाद्यान्नों का निर्यात किया था | खाद्यान्नों के उत्पादन की मात्रा जो 1950-51 में 6 करोड टन से भी कम थी वह बढकर 1998 में 19.5 करोड टन हो गई थी और शताब्दी के अंत मे वह 20 करोड टन से अधिक थी | खाद्यान्नों की प्रति व्यक्ति प्रतिदिन उपलब्धता जो 1990-91 में 400 ग्राम थी वह बढकर 1997 मे 473.7 ग्राम हो गई थी| खाद्यान्नों की वृध्दि दर जो 1960-61-1969-70 की अवधि में केवल 1.72 प्रतिशत थी वह बढकर 1980-81-1989-90 की अवधि में 3.54 प्रतिशत हो गई थी परंतू 1990-91 1997-98 की अवधि में यह 1.68 प्रतिशत ही थी जो साठ के दशक से भी कम है | ऐसा प्रतीत होता है कि धीरे-धीरे हरित क्रांती का प्रभाव कम होता जा रहा है |

खाद्यान्नों के उत्पादन में जो उपलब्धि प्राप्त हुई है यह केवल कुछ फसलों विशेष कर गेहूं और चावल तक सीमित है | कहा जाता है कि हरित क्रांति केवल गेहूं और चावल की क्रांति है मोटे अनाज जैसे ज्वार, चना, बाजरा आदि के उत्पादन में उपलब्धि उत्साहवर्धक नहीं है | कहा जाता है जिस भूमि पर रासायनिक खादों का प्रयोग हा जाता है वहां दो दालीय फसलें नहीं होती है | दो दालीय फसलों के उत्पादन में हरित क्रांति का कोई प्रभाव नहीं है | इस प्रकार यदि यह कहाँ जाए कि फसलों के उत्पादन में विकृतियाँ उत्पन्न हो गई है ता अनुचित नहीं होगा |

हरित क्रांति कुछ ही क्षेत्रों तक सीमित है | पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, तमिलनाडू और महाराष्ट्र ही इससे लाभान्वित हुए है, और राज्य या तो आंशिक रुप से इससे लाभान्वित हुए है या बिल्कुल अछुते है | उन्नतशील बीजों की क्षेत्रीय प्रजातियों का अभाव है|

रासायनिक खाद के प्रयोग के कारण गोबर की खाद और हरी खाद का प्रयोग कम हो गया है जिसके कारण धरती की परत धीरे-धीरे कठोर होती चली जा रही है | कठोर परत की जुताई हल बैल से संभव नहीं है और ट्रैक्टर का प्रयोग बढता जा रहा है | रासायनिक खादों और कीटनाशक दवाइयों का अत्याधिक प्रयोग पर्यावरण प्रदुषण के लिए जिम्मेदार है |

हरित क्रांति का सबसे लाभदायक प्रभाव यह है कि कृषकों की मान-मर्यादा में वृध्दि हुई है | कृषकों का दृष्टिकोन अधिक व्यावसायिक हो गया है | अंधविश्वास और भाग्यवादिता का आवरण धीरे-धीरे हटता जा रहा है | फिर भी हरित क्रांती का वास्तविक लाभ कृषकों को तभी मिल सकता है जबकि सिंचाई और खाद की पर्याप्त और उचित व्यवस्था हो तथा प्रयोगशालाएं कृषको के पास जाएं और कृषकों को प्रयोगशालाओं के पास न जाना पडे | कीटनाशक दवाइयों की जगह कीडे-मकोडे को खा जाने वाले पक्षियों का प्रयोग होना चाहिए जैसा कि नार्वे और स्विडन में होता है | कीटनाशक दवाइयों के प्रयोग से भूमि को उर्वरा बनाने वाले जीव-जन्तुओं की हानि तो होती ही है साथ ही मानव स्वास्थ पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडता है | गोबर व हरी खाद का प्रयोग अधिक होना चाहिए और रासायनिक खाद का संतुलित प्रयोग होना चाहिए |

संदर्भग्रंथ सुची :-

1) कृषि अर्थशास्त्र के सिध्दान्त एवं भारत में कृषि विकास, डॉ. के.एन. जोशी, डॉ. मंजुला मिश्रा, विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007 प्रथम संस्करण.
2) भारतीय अर्थव्यवस्था, डॉ. सुदामासिंह, डॉ. राजीव कृष्ण सिंह, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण.
3) भारतीय अर्थव्यवस्था, व्हि.के. पुरी, एस.के. मिश्रा, हिमालया पब्लिसिग हाऊस, नई दिल्ली, 27 संस्करण.
4) Indian Economy S.K. Mishra, V.K. Puri हिमालया पब्लिसिग हाऊस, 26th edition -2008,
5) भारतीय अर्थव्यवस्था - प्रा. ए.आर. रायलेखकर, प्रा. डॉ.बी.एच. दामजी
6) भारतीय अर्थव्यवस्था - प्रा.गु.पां.देव, प्रा. ग.ना. झामरे.

❑❑❑

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly
Issue IX Vol III , May. To Oct. 2017

UGC Approved
Sr. No. 64310

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

Index

Sr. No.	Article Title	Author	Page No.
1	साहित्य और इतिहास भूषण के काव्य के विशेष सन्दर्भ में	संतोष साहेबराव नागरे	1
2	सामाजिक सरोकारिता को निबाहती राजन स्वामी की गज़ल	डॉ. संजय सोपान रणखांबे	3
3	हिंदी गज़लों में आतंकवाद की भयावहता	डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	7
4	विषय : साहित्य समाज और हिंदी सिनेमा : एक चिंतन	प्रा.डॉ.एम.ए.येल्लूरे	10
5	बौद्ध दर्शन और असंगघोष की कविता	डॉ.संजय जाधव , प्रा.डहाळे मुंजाभाऊ	13
6	प्रतीक नाटक परम्परा और भारतेंदु के नाटक	प्रा. खराडे आर.एम.	18
7	खिलाडियों के जीवन में संतुलित आहार और व्यायाम का महत्व	प्रा. अतुल शर्मा	22
8	राष्ट्रीय एकता में शिक्षा का योगदान	डॉ. प्रविण कांबळे	24
9	इक्कीसवी सदी में दलित आन्दोलन	प्रा.डॉ.सौ.मंगला श्री. कठारे	26
10	सर्वेष्वरदयाल सक्सेन कष्त 'लडाई' नाटक की प्रासंगिकता	प्रा.डॉ.संजय जाधव	28
11	"मराठवाड्यातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : एक सांख्यिकीय विश्लेषण"	डॉ.नंदकिशोर मुळे	34
12	"मराठवाड्यातील भूमिहीन शेतमजुर : एक सांख्यिकीय विश्लेषण"	शिंदे भगवान	38
13	कापूस आदान-प्रदान किंमत विश्लेषण	डॉ. बोन्नर रेणुकादास यशवंत	41
14	'लीळाचरित्र' ग्रंथातून चक्रधर स्वामींनी सांगितलेला उपदेश	डॉ. विजयकुमार शिवदास ढोले	45
15	नागनाथ कोत्तापल्ले यांचे काव्यविश्व	प्रा. डॉ. मारोती माधवराव घुगे	48
16	बहिणाबाईची कविता	प्रा. डॉ. मारोती रामराव कोल्हे	53
17	आदिम काव्यातील थोर महात्मे	प्रा. डॉ. राजेश धनजकर	57
18	'सोनचफा' व 'कस्तुरीमृग' जीवनाचा शोध घेणारी नाटयकृती	डॉ.संदीप अ.बनसोडे	62

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Half Yearly | UGC Approved | ISSN : 2319 - 8648
Issue IX Vol III , May. To Oct. 2017 | Sr. No. 64310 | Impact Factor : 2.143

"मराठवाड्यातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : एक सांख्यिकीय विश्लेषण"

डॉ.नंदकिशोर मुळे
अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख व
संशोधक मार्गदर्शक
सुंदररावजी सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव जि.बीड

---------- (11) ---------- Dept. of Economics ----------

प्रस्तावना :-

शेतकरी हा भारतातील सर्वात विकलांग व आर्थिकदृष्ट्या कमकुवत असलेला घटक आहे. परंतु तोच भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा म्हणून ओळखला जातो. कारण शेतीच्या विकासातुन अर्थव्यवस्थेतील इतर क्षेत्राचा विकास होतो आणि त्यातुन आर्थिक विकासाचा दर उंचावतो. पण आज शेतीत काम करणाऱ्या शेतकऱ्यांस कुठलाच शासकीय आधार नसल्याने भारतात आत्महत्या करणाऱ्यांची संख्या खुप मोठी आहे. शेतकऱ्यांच्या वाढत्या आत्महत्यांनी समाज आणि शासन कर्त्यासमोर अनेक प्रश्न निर्माण केली आहेत.

शेतकऱ्यांच्या वाढत्या आत्महत्येमुळे महाराष्ट्रासह संपुर्ण देशात अनेक आर्थिक, सामाजिक आणि राजकीय समस्या निर्माण झालेल्या आहेत. शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येनंतर त्यांचे कुटूंब उघड्यावर पडते. शेतकरी जिवंत असतांना कुटूंबात जेवढ्या समस्या नसतील तेवढ्या त्यांच्या आत्महत्येनंतर निर्माण होतात. परंतु शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या का होतात यावर अनेक प्रकारे चर्चा, संवाद झाले पण आत्महत्या मात्र कमी झाल्या नाहीत.

प्रस्तुत विषयांच्या अनुषंगाने महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येचा सांख्यिकीय माहितीचा अभ्यास या शोध निबंधात करण्यात आलेला आहे.

महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या (1995 ते 2015)

अ.क्र.	वर्ष	आत्महत्या केलेल्या शेतकऱ्यांची संख्या
1	1995	1086
2	1996	1981
3	1997	1917
4	1998	2409
5	1999	2023
6	2000	3032
7	2001	3536
8	2002	3695
9	2003	3836
10	2004	4147
11	2005	3926
12	2006	4453

13	2007	4238
14	2008	3802
15	2009	2872
16	2010	3141
17	2011	3337
18	2012	3786
19	2013	3146
20	2014	5650
21	2015	3228
	एकूण	**60750**

स्त्रोत- NCRB रिपोर्ट 2014

वरील आकडेवारीवरुन असे दिसते की, महाराष्ट्रात सन 1995 ते 2003 या काळात 23902 शेतकऱ्यांनी आपली जिवन यात्रा संपविली. सन 2003 नंतर आत्महत्या करणाऱ्या शेतकऱ्यांच्या संख्येत वेगाने वाढ झालेली दिसून येते. 2004 ते 2013 या 9 वर्षाच्या काळात 36848 शेतकऱ्यांनी महाराष्ट्रात आत्महत्या केल्या. परंतु महाराष्ट्रात सर्वाधिक आत्महत्या सन 2014 मध्ये 5650 तर सर्वात कमी सन 1995 मध्ये 1083 एवढ्या आत्महत्या झाल्या आहेत. वरील आकडेवारीचा विचार केला तर आत्महत्याचे प्रमाण हे कृषी प्रधान देशाच्या दृष्टीने अतिशय घातक व सामाजिक, राजकीय व आर्थिक दृष्ट्या चिंताजनक आहे यात काही वावगे नाही.

मराठवाड्यातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या (सन 2002 ते 2015)

अ.क्र.	वर्ष	आत्महत्या केलेल्या शेतकऱ्यांची संख्या
1	2002	07
2	2003	14
3	2004	92
4	2005	121
5	2006	379
6	2007	325
7	2008	283
8	2009	226
9	2010	182
10	2011	162

11	2012	195
12	2013	1205
13	2014	416
14	2015	924
	एकूण	**4531**

स्त्रोत- महाराष्ट्र टाईम्प 27 डिसेंबर 2015 व दै.लोकमत दि.13 डिसेंबर 2014 आणि 18 नोव्हेंबर 2015

उपरोक्त आकडेवारीवरुन असे दिसुन येते की, मराठवाड्यात सन 2002 ते 2015 या काळात 4531 शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केल्या सन 2013 मध्ये 1205 शेतकऱ्यांनी सर्वात जास्त आत्महत्या केल्या तर 2002 मध्ये 07 शेतकऱ्यांनी म्हणजेच सर्वात कमी आत्महत्या केल्याच्या दिसून येतात..

मराठवाड्यातील जिल्हा निहाय शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या

अ.क्र.	जिल्हा	2015 पुर्ण	2016 जाने. फेब्रु.
1	बीड	299	22
2	नांदेड	187	23
3	उस्मानाबाद	162	20
4	औरंगाबाद	138	19
5	लातुर	104	15
6	परभणी	100	10
7	जालना	81	20
8	हिंगोली	37	08
	एकूण	**1109**	**139**

स्त्रोत- 29/02/2016 सकाळ

आत्महत्या केलेल्या शेतकऱ्यांचे वयोगट

अ.क्र.	वयोगट	आत्महत्येची टक्केवारी
1	15 ते 20 वर्ष	1%
2	21 ते 30 वर्ष	18%
3	31 ते 40 वर्ष	31%
4	41 ते 50 वर्ष	24%
5	51 ते 60 वर्ष	15%
6	61 ते पुढील	11%

स्त्रोत- सकाळ 28/02/2016

एकरनिहाय शेती आणि आत्महत्या केलेले शेतकरी

अ.क्र.	शेती एक्करमध्ये	आत्महत्येची टक्केवारी
1	0 ते 1 एक्कर	15%
2	1 ते 1.5 एक्कर	12%
3	1.5 ते 2.5 एक्कर	29%
4	2.5 ते 5 एक्कर	31%
5	5 ते 7.5 एक्कर	11%
6	7.5 ते 10 एक्कर	5%
7	10 ते 12.5 एक्कर	2%
8	12.5 ते 15 एक्कर	1%
9	15 पेक्षा जास्त	2%

वरील आकडेवारीवरुन असे दिसून येते की, 97 आत्महत्याग्रस्त शेतकरी कुटूंबाकडे शेतीशिवाय दुसरा पर्याय नाही. यामध्ये 56% अल्पभुधारक आणि 31% अल्पभुधारक आत्महत्या करणारे शेतकरी आहेत. नापिकी, कर्जाचा बोजा, सावकाराचा तगादा यामुळे आत्महत्या करणारे शेतकरी 49% आहेत. महीला शेतकरी 4% आहेत. तसेच एक लाखाच्या आत कर्ज असणारे शेतकरी 61% आहेत. तसेच सेवा सोसायट्या आणि शासकीय बँकाकडून कर्ज घेतलेल्या शेतकऱ्यांचे प्रमाण 43% आहे.

सारांश :-

शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या थांबविण्यासाठी, शेतकऱ्यांच्या समस्यांच्या मुळाशी जाऊन त्या सोडविण्यासाठी योग्य ती पाऊले उचलावी लागतील. परंतु आत्महत्या केल्यानंतरही प्रश्न संपत नाहीतच परंतु अशा शेतकऱ्यांना शासन शासकीय मदन जाहीर करते व ती प्रक्रिया प्रचंड वेळ खाऊ असते. सरकार आत्महत्या झालेल्या शेतकऱ्यांना मदत करते पण शेतकऱ्यांनी आत्महत्यांच करु नये यासाठी सरकारकडे कुठलेही ठोस धोरण आजतरी नाही. त्यामुळे एकीकडून आसमानी आणि दुसरीकडून सुलतानी अशा दुहेरी संकटात आजचा शेतकरी सापडला आहे.

संदर्भसूची :

1. प्रा. एन.एल. चव्हाण- भारतीय अर्थव्यवस्था
2. प्रा. निता वाणी- कृषी अर्थशास्त्र
3. योजना मासिक, जानेवारी 2015
4. दैनिक महाराष्ट्र टाइम्स, डिसेंबर 2015
5. दैनिक सकाळ- 28/02/2016.

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue

Issue I, Vol II 10th February 2018

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

Economics			
1	Trends and Patterns of Public Health Expenditure: A Study for the State Odisha, India	Susanta Nag	194
2	Globalization and Economic Growth in India	Dr. Mahadeo Yadav	205
3	Impact on GST on Various Sectors	Mr. Devidas Gokul Gavali	208
4	Globalisation and India's International Trade – A Study	Dr. N.V. Hodlurkar	211
5	"Reflections Of Globalization On Indian Agriculture"	Avinash Kamalakar Jumare , Suryawanshi Bhandaji Rangrao	214
6	Globalisation And Its Impact On Indian Economy	Nasiket G. Suryavanshi	217
7	Impact Of Globalisation On Indian Agriculture	Prof. Rakesh Bhoir	220
8	Economic Reforms and Agricultural Production in India	Sakshi , Susanta Nag, Sonia Khajuria	224
9	जागतिकीकरण व भारतीय शिक्षण : संधी आणि आव्हाने	डॉ. सुरेश ए. घुमटकर डॉ. माधव एच. शिंदे	232
10	जागतिकीकरण आणि भारतीय कृषी व्यवस्था	पी.आर.चाटे	236
11	जागतिकीकरणानंतर भारतीय कृषी क्षेत्र.	प्रा.बालासाहेब जोगदंड	240
12	जागतिकीकरण आणि नागरीकरण	डॉ. संजय काळे	243
13	जागतिकीकरण : विकास आणि विषमता	डॉ. मारोती तेगमपुरे	247
14	" जागतिकीकरण : एक सर्वव्यापी प्रक्रिया "	डॉ. नंदकिशोर मुळे	250
15	" जागतिकीकरण : समाज आणि संस्कृती "	भगवान .वि. शिंदे	252
16	जागतिकीकरणाचा भारतीय शिक्षणावरील परिणाम	मनिषा बाबुराव सुरासे	254
17	मराठवाडा आणि कोरडवाहु फळबाग	डॉ. डी.एन. जिगे	257

ISSN : 2319 – 8648 **CURRENT GLOBAL REVIEWER** Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue I, Vol II , 10th Feb. 2018

" जागतिकीकरण : एक सर्वव्यापी प्रक्रिया "

डॉ. नंदकिशोर मुळे

विभाग प्रमुख व संशोधक मार्गदर्शक , अर्थशास्त्र विभाग , सुंदररावजी सोळंके महाविद्यालय माजलगाव

----------(14)----------

प्रस्तावना :-

विसाव्या शतकाच्या अखेरच्या कालखंडातील एक महत्त्वपुर्ण घडामोड म्हणून जागतिकीकरणाचा उल्लेख करता येईल. जागतिकीकारणाच्या प्रक्रियेचा प्रभाव जगातील बहुतेक सर्वच राष्ट्रांवर पडलेला आहे. एकविसाव्या शतकात जगातील कोणतेही राष्ट्र या प्रक्रियेपासून अलिप्त राहु शकत नाही, असे सर्वसाधारणपणे मानले जाते. याचा अर्थ जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेने आता सर्वांना आपल्या कवेत घेतले आहे. तिचे बरेवाईट परिणाम संपूर्ण मानव-समूहाला भोगावे लागणार आहेत.

ब्रिटिशांनी भारतीयांची आर्थिक पिळवणुक करण्यासाठी जे वसाहतीकरणाचे धोरण राबवीले तेच धोरण जागतिकीकरणाच्या नावाखाली राबविण्यास सुरुवात केली आहे. यामुळे काही टक्क्यांनी जी आर्थिक प्रगती होणार असेल ती आधीच श्रीमंत असलेल्या प्रस्थापितांचीच गरिबांच्या वाळक्यासुक्या भाकरीवर पडला तर तो प्रगतीच्या लोणच्याचा तुकडाच. शिवाय हा विकास आधिक तर अर्थिक पैलू असलेला आहे. इतर सामाजिक सांस्कृतीक मुल्यांच्या उन्नतीवर फारसे लक्ष दिले जात नाही.

म्हणून जागतिकीकरण ही प्रक्रिया समजावून घेण्याअगोदर जागतिकीकरण म्हणजे काय हे समजावून घेणे आवश्यक आहे.

❖ **जागतिकीकरण म्हणजे काय ?**

व्याख्या :- मालकॉम एस. ॲडिसे यांच्या मते, 'अर्थव्यवस्थेचे जागतिकीकरण म्हणजे, उद्योन्मुख अर्थव्यवस्थेला जागतिकीकरण परिमाण प्राप्त करुन देणे होय'.

जागतिकीकरण म्हणजे, भिन्न देशांनी एकमेंकाजवळ येणे व्यापार व गुंतवणूक यावरील निर्बंध दुर करणे, आंतरराष्ट्रीय पातळीवरील व्यक्ती, वस्तु, सेवा, विचार, रितिरिवाज यांची सुलभ देवाण-घेवाण होणे या साऱ्या गोष्टी जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेत अभिप्रेत आहेत.

❖ **संपूर्ण जगाची एकच अर्थव्यवस्था :-**

विसाव्या शतकाच्या शेवटच्या दोन दशकांत जगातील बहुतेक सर्वच देशांच्या अर्थव्यवस्थांना व्यापक संदर्भ प्राप्त झाला. एखाद्या देशाच्या आर्थिक व्यवहारांची व्याप्ती फक्त त्या देशापुरतीच मर्यादित रहिली नाही. विज्ञान व तंत्रज्ञानाच्या क्षेत्रातील विस्मयकारक प्रगतीमुळे जगातील सर्व राष्ट्रे एकमेकांच्या इतकी जवळ झाली की, एका राष्ट्रात घडणाऱ्या अर्थिक व्यवहारांचे किंवा घडामोडीचे पडसाद इतर राष्ट्रांमधी उमटू लागले. म्हणजे संपूर्ण जगाची अर्थव्यवस्था एकच बनली. अशा परिस्थितीत प्रत्येक राष्ट्राला आपली आर्थिक नीती निश्चित करताना अथवा आर्थिक प्रश्नासंबंधी धोरणात्मक निर्णय घेताना जागतिक घडामोर्डीची दखल धेण भाग पडु लागले. अशा प्रकारे जागतिकीकरणाची प्रक्रिया अटळ व सर्वसामावेशक होत गेली.

❖ **जागतिकीरणाचे टप्पे :-**

१. विनिमयदराचे समायोजन आणि रुपयाचे परिवर्तन :- देशाची अर्थव्यवस्था जागतिक अर्थव्यवस्थेशी जोडण्याच्या दृष्टीने सर्वात महत्त्वाचा मार्ग म्हणजे चलन पुर्णतः परिवर्तित करणे याचा अर्थ शासकीय हस्तक्षेपाशिवाय आंतरराष्ट्रीय बाजारात विनिमयदर ठरु देणे. याचवरोवर क्रमश, विनिमय नियंत्रणे उठविणे आवश्यक आहे.

२. आयतीवाबत उदारधोरण :- जागतिक बॅकेच्या १९९० च्या अहवालातील भारतातील व्यापार सुधारणेच्या व्यूहरचेनुसार बॅकेने आयात धोरणाची पूर्नरचना करण्याची शिफारस केली असुन फक्त एका निर्बधिंत वस्तूंची यादी तयार करावी आणि भारतीय अर्थव्यवस्थेत भांडवली वस्तु, मध्यम वस्तु, कच्चा माल आणि उपभोग्य वस्तु इ. वस्तु मुक्तपणे येवु देणे.

३. विदेशी भांडवलाला मुक्तद्वार :- विदेशी भांडवलाला आकर्षित करुन भारतीय अर्थव्यवस्था जागतिक अर्थव्यवस्थेशी जोडण्याचे दृष्टीने भारत सरकारने विदेशी गुंतवदारांसाठी दरवाजे खुले केले आहेत.

❖ **जागतिकीकरणाच्या दिशेने वाटचाल :-** भारताने सन १९९१ पासुन जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेत सहभागी होण्याच्या दिशेने आपली वाटचाल सुरु केली आहे. नवे आर्थिक धोरण-१९९१ देशाची या अर्थिक संकटातून सुटका करण्यासाठी आणि

देशाच्या अर्थव्यवस्थेची घडी व्यवस्थीत बसविण्यासाठी पी.व्ही. नरसिंहराव सरकारने सन १९९१ मध्ये नव्या आर्थिक धोरणाच्या अंगीकार करण्याचा महत्त्वपुर्ण निर्णय घेतला.

नवं औद्योगिक धोरण - भारत सरकारने आपल्या नव्या आर्थिक धोरणाला मूर्त स्वरुप प्राप्त करुन देण्यासाठी सन १९९१ मध्ये नवे औद्योगीक धोरण नाही केले.

मुक्त अर्थव्यवस्थेचा स्विकार :- भारत सरकारने आपले नवे आर्थिक धोरण आणि नवे औद्योगीक धोरण जाहीर करुण आपण मुक्त अर्थव्यवस्थेचा स्वीकार करीत असल्याची ग्वाही दिली.

पुर्वीच्या आर्थिक नीतीचा त्याग - भारत सरकारने मुक्त अर्थव्यवस्थेचा केलेला स्वीकार ही एक प्रकारे त्याने आपल्या पूर्वीच्या आर्थिक नीतीला दिलेली सोडचिठ्ठी होती.

❖ **जागतिकीकरण आणि भारत :-**

जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेचा प्रभाव आपल्या देशाच्या अर्थव्यवस्थेवरही पडला आहे. तसा तो पडणे स्वभावीकच होते. जागतिकीकरणाचे स्वरुप ऐवढे व्यापक आहे की, जागातील कोणतेही राष्ट्र यापासून बाजूला राहू शकत नाही. जगातील बहुसंख्य राष्ट्रांनी स्वीकारलेल्या या प्रक्रियेतून आपण अंग काढून घेणे हे जगाच्या अर्थिक व राजकीय व्यवहारापासून एकाकी पडण्यासरखे होईल. तेव्हा जगातील बहुसंख्य देशांप्रमाणे आपल्या देशानेही जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेत सहभागी होण्याचा निर्णय घेतला आहे. जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेचा एक भाग बनण्यास आपल्या देशानेही मान्यता दिली आहे.

❖ **सारंश -**

आज ही प्रक्रिया अगदीच टाकाऊ नाही, पण ती राबवणाऱ्यानी एकुण समाजकल्याणाचा व संस्कृतीचा वारसा जपण्याचा प्रधान हेतु ठेवला पाहीजे. तरच भारतीय संस्कृतीला अभिप्रेत असलेले वसुधैव कुटुंबकम चे ईप्सित साध्य होईल. नाही तर ही प्रक्रीया म्हणजे केवळ दाखवायचे दातच ठरतील आणि पुन्हा थोड्याच दिवसात भारताचे वसाहतीकरण होईल.

❖ **संदर्भ सुची -**

१. भारतीय अर्थव्यवस्था व नियोजन - के.सागर
२. समाजशास्त्र - प्रा.ए.वाय. कोंडेकर
३. भारतीय अर्थव्यवस्था - प्रा.एन.एल.चव्हाण
४. भारतीय अर्थव्यवस्था - श्रीधर देशपांडे, विनायक देशपांडे

ISSN 2394-5303

International Multilingual Research Journal

Printing Area

Issue-39, Vol-02, March 2018

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

13) Working Women: An Irony in unorganized Sector
Dr. Anupama Tiwari—Neha Sharma, Kashipur || 67

14) On Translating Desraj Kali's Shanti Parav: Punjabi Dalit Fiction as Postmodern Discourse
Neeti Singh, Vadodara. || 71

15) CONSERVATION & MEASURES OF LIBRARY MATERIAL
Ranjan Singh, Jammu || 77

16) Teaching Attitude among B. Ed. Trainees Studying through Regular & Distance Mode
Swangi, Allahabad. || 85

17) Jane Austen's Women Characters: in Context to Women Empowerment
Dr. Usha Sawhney, Meerut || 88

18) Poetry of Restraint & Denial: a reading of the poems & memoirs of Lal Singh Dil
Neeti Singh, Vadodara. Gujarat || 92

19) HOW TO MOTIVATE AND RETAIN EMPLOYEES IN SERVICE INDUSTRY
SAWITRI DEVI, Bahadurgarh (Haryana) || 95

20) जलसाक्षरता काळाची गरज
श्री विद्यासागर सरदारसिंग बैनाडे, सिडको, औरंगाबाद. || 99

21) रि—इंजिनीअरिंग
प्रा. भगवान रा.डोके, वाळुज, औरंगाबाद || 102

22) संत बहिणाबाई
प्रा. रमेश बलभीम जाधवर, कळंबोली || 105

23) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार आणि साहित्य
प्रा.डॉ.संजय बन्सीधरराव कसाब, पूर्णा (जं.) परभणी || 108

24) मराठवाड्यातील भूमिहीन शेतमजूर : एक अभ्यास
डॉ. नंदकिशोर मुळे, माजलगाव, जि.बीड || 112

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

24

मराठवाड्यातील भूमिहीन शेतमजूर : एक अभ्यास

डॉ. नंदकिशोर मुळे
विभाग प्रमुख व संशोधक मार्गदर्शक
अर्थशास्त्र विभाग
सुंदररावजी सोळंके महाविद्यालय, माजलगाव, जि.बीड

प्रस्तावना :-

मराठवाडा हा महाराष्ट्र राज्यातील एक दुष्काळग्रस्त आणि मागासलेला भाग म्हणून ओळखला जातो त्याचे कारण म्हणजे या भागात आजही औद्योगिकीकरण मोठ्या प्रमाणावर झाले नाही. तसेच मराठवाड्यातील शेतीला अल्प पाणीपुरवठा होतो. त्यातच मराठवाड्यात लोकसंख्या वाढीचा वेग जास्त आहे. तसेच जमिनीचे तुकडीकरण देखील मोठ्या प्रमाणात झालेले असल्याने मराठवाड्यात भूमिहीन शेतमजूरांची संख्या दिवसेंदिवस वाढत आहे.

तुमची आमची जन्मभूमी व कर्मभूमी असलेला, 'मराठवाडा' केवळ एक भौगोलिक प्रदेश नसून त्याला एक विशेष इतिहास आहे. सोबतच त्याची एक वैशिष्ट्यपूर्ण आर्थिक रचना, सामाजिक जडणघडण व राजकीय वाटचाल आहे. म्हणून प्रस्तुत विषयाच्या अनुषंगाने या शोध निबंधात भूमिहीन शेतमजूर म्हणजे काय? व मराठवाड्यातील भूमिहीन शेतमजूराविषयी माहितीचा उहापोह करण्यात आलेला आहे.

- **भूमिहीन शेतमजूर म्हणजे काय ?**

'सन १९६१ च्या जनगणना अहवालानुसार' 'भूमिहीन शेतमजूर म्हणजे, असे मजूर की जे दुसऱ्याच्या शेतावर काम करतात. त्यांना कामाच्या बदल्यात पैसा आणि वस्तुंच्या स्वरुपात मोबादला दिला जातो अशा मजूरांना भूमिहीन असे म्हणतात.'- जनगणना रिपोर्ट-१९६१.

- **मराठवाड्यातील शेतमजूरांचे प्रमाण :**

मराठवाड्यातील शेतमजूरांचे प्रमाण सरासरीने १८% आहे. शेतमजुरांच्या प्रकारात लहान भूमीधारक, भूमिहीन शेतमजूर आणि रोजंदारी मजूर यांचा समावेश होतो. १९८१ या कालावधीत मराठवाड्यात शेतमजूरांची संख्या १४५९० लाख वरुन १८२७० पर्यंत वाढली याचाच अर्थ मराठवाड्यात भूमिहीन शेतमजुरांची संख्या मोठ्या प्रमाणात आहे. शेतमजुरांच्या संख्येत इतक्या वेगाने वाढ होण्याची अनेक कारणे आहेत. थोडक्यात असे म्हणता येईल की ज्या-ज्या घटनेमुळे अल्पभुधारकांची आणि ग्रामीण व्यावयासिकांची परिस्थिती खालावत गेली ती सर्व कारणे शेतमजुरांची संख्या वाढविणारी ठरली.

- **मराठवाड्यातील जिल्हा निहाय शेतमजुरांची संख्या:-**

अ.क्र.	जिल्हा	शेतमजूरांची संख्या (लाखात)
1	लातुर	383939
2	परभणी	288438
3	जालना	261713
4	औरंगाबाद	351679
5	बीड	327830
6	नांदेड	539588
7	उस्मानाबाद	265167
8	हिंगोली	198494
	एकूण	**2616848**

स्त्रोत- २०११ ची जनगणना अहवाल

वरील आकडेवारीवरुन असे दिसून येते की, मराठवाडा विभागातील आठ ही जिल्ह्याचा विचार करता असे दिसून येते की, सर्वच जिल्ह्यात शेतमजूरांची संख्या मोठ्या प्रमाणात आहे. मराठवाडा विभागात एकूण शेतमजुरांची संख्या २६ लाख १६ हजार ८४८ ऐवढी आहे. नांदेड जिल्ह्यात शेतमजुरांची संख्या सर्वात जास्त असून हिंगोली जिल्ह्यात ती सर्वात कमी आहे. वरील आकडेवारीचा विचार केला असता असे दिसते की मराठवाड्यात गेल्या ५० ते ६० वर्षात शेतमजुरांच्या संख्येत वाढीची प्रवृत्ति दिसून येते.

- **मराठवाड्यातील ग्रामीण व शहरी शेतमजुरांची संख्या:-**

मराठवाड्यात आज शहरी भागात फार मोठ्या प्रमाणात वाढ व आधुनिककीरण होतांना दिसते. खेड्याच्या तुलनेत शहरी भागातील लोकांचे जीवन अतिशय चांगल्या पध्दतीने असल्याचे समोर येत आहे त्याचे एकमेव कारण म्हणजे शहरात मिळत असलेला रोजगार परंतु त्यांच्या तुलनेत ग्रामीण भागात रोजगाराचे शेती हे एकच साधन असल्याने ग्रामीण जनतेचा सर्व भार शेतीवरच आहे. परिणामी शहरी भागाच्या तुलनेत ग्रामीण भागातील लोकांचे जीवन कष्टमय आहे. तरी मराठवाड्यातील ग्रामीण व शहरी शेतमजुरांची संख्या अभ्यासणे येथे क्रमप्रत आहे.

अ.क्र.	जिल्हा	ग्रामीण	शहरी	एकूण
1	बीड	313683	14147	327830
2	जालना	256149	5564	261713
3	औरंगाबाद	330212	21467	351679
4	परभणी	266158	22280	288438
5	लातूर	371168	12771	383939
6	नांदेड	510577	29011	539588
7	उस्मानाबाद	254182	10985	265167
8	हिंगोली	192201	6293	198494
	एकूण	2494330	122518	2616848

स्त्रोत- २०११ ची जनगणना अहवाल

वरील आकडेवारी वरुन असे दिसते की, मराठवाड्यातील ग्रामीण व शहरी शेतमजूरांचा विचार करता, असे दिसते की, शेतमजूरांची संख्या खेड्यात जास्त असून ती खेड्यात विखुरलेली आहे. मराठवाड्यात ग्रामीण भागात २४ लाख ९४ हजार ३३० इतकी मोठ्या प्रमाणात शेतमजूरांची संख्या आहे. तर ग्रामीण भागात १ लाख २२ हजार ५१८ इतकी अत्यल्प आहे.

▪ **मराठवाड्यातील शेतमजूरांची घनता:-**

मराठवाड्यातील तालुक्याचा तौलनिक अभ्यास केला तर, जास्त घनता असणारे तालुके व कमी घनता असणारे तालुके या मध्ये १) शेतमजुरांची घनता ३५ शेतमजूर दर चौरस किलोमिटर असणारे तालुके व २) शेतमजुरांची घनता २५ पेक्षा कमी दर चौ.कि.मी. असणारे तालुके असे वर्गीकरण करता येईल. यामध्ये पहिल्या गटात देगलुर, बिलोली, नांदेड, मुखेड, हादगाव परभणी, वसमत, पाथरी, अंबेजोगाई, उस्मानाबाद, उमरगा, लातुर, निलंगा व अहमदपूर यांचा समावेश होतो. तर दुसऱ्या गटात औरंगाबाद, खुलताबाद, कन्नड, वैजापूर, भोकरदन, जाफराबाद, बीड, गेवराई, केज, पाटोदा, आष्टी, परांडा व भुम यांचा समावेश होतो.

यावरुन आपल्या असे लक्षात येते की, शेतमजुरांचे केंद्रीकरण काही तालुक्यात अधिक प्रमाणात झालेले आहे.

▪ सारांश -

उपरोक्त अभ्यासावरुन असे दिसून येते की, मराठवाड्यातील आठही जिल्ह्यात भूमिहीन शेतमजूरांची संख्या एकूण संख्येच्या मानाने मोठया प्रमाणात आहे. थोडक्यात मराठवाड्यातील सर्वच जिल्ह्यात शेतमजूरांतील प्रवाह हा समिश्र स्वरुपाचा राहिलेला आहे. मराठवाड्यात शहरी भागापेक्षा ग्रामीण भागात शेतमजुरांचे प्रमाण अधिक आहे. यास सामाजिक, राजकीय आणि आर्थिक घटक जबाबदार असले तरी आज अनेक स्वरुपाच्या समस्या मराठवाड्यातील शेतमजुरांपुढे उभ्या आहेत. जर या समस्या सोडविल्या नाही तर शेतमजुरांची संख्या एकूण संख्येच्या जवळ येईल हे नाकारता येत नाही.

संदर्भ सुची -

१. प्रा.राम देशमुख अर्थमोळी (मराठवाडा अर्थशास्त्र परिषद : अध्यक्षीय भाषणे)- विमल प्रकाशन
२. मिश्र एस.के., पुरी बि.के.- 'भारतीय अर्थव्यवस्था'
३. डॉ.विजय कविमंडन- कृषी अर्थशास्त्र
४. २०११ चा जनगणना अहवाल.

❑❑❑

www.विद्यावार्ता™.कॉम
तेथे शब्दब्रम्ह कवळले